छत्रसाल

तलवार और कलम के धनी

पं. प्रनवासी लाल दुबे

छत्रसाल

तलवार और कलम के धनी

यह प्रति साहित्य अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद् भोपाल की पाठक मंच योजना के अन्तर्गत जनवरी 2014 में चर्चा हेतु प्रदाय वर्ष 2013-14

पं. ब्रजवासी लाल दुबे

- लेखक :
  पं. ब्रजवासी लाल दुबे
  धाम, पन्ना (म. प्र.)

- प्रकाशक :
  श्री प्राणनाथ अकादमी
  धाम, पन्ना (म. प्र.) 07732-252525

- आवृत्ति :
  प्रथम आवृत्ति : 500 प्रतियाँ

- न्यौछावर :
  200/- दो सौ रुपये मात्र

- मुद्रक :
  पद्मावती टेक्नो ऑफसेट
  धाम, पन्ना (म. प्र.)

- प्रकाशन तिथि :
  शरद्पूर्णिमा 11 अक्टूबर 2011

- पुस्तक प्राप्ति स्थान :
  श्री पारसमणि शास्त्री
  श्री प्राणनाथ अकादमी
  धाम, पन्ना (म. प्र.) 9425420525

- इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पूर्णब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनन्द अखंड अपारे ।
शिव सनकादिक आदि के इच्छित, शेष न पावत पारे ।।
अगम जानि के निगम कहाए, खोजि खोजि पचिहारे ।
जानि के मूल धनी अंगना अपनी, सो घर आए हमारे ।।
श्री ठकुरानी जी सखियन सुधां, लेकर संग पधारे ।
त्रिगुण फाँस के फंद परे तें, सो फंदा निरवारे ।।
वारि वारि जाऊँ मैं अपने पिया पर, शोभा मुखहुँ न आवे ।
सिंहासन आसन बैठारे, छत्रसाल गुन गावें ।।

– छत्रसाल